बाईबल

की कुछ

भविष्यवाणीओं

की समीक्षा

ईसाई मत में भविष्यवाणियों का बहुत ज्यादा महत्व है। यह प्रचारित किया जाता है कि बाइबिल में भविष्य के सम्बन्ध में अनेक भविष्यवाणियां हैं, जो उनके अनुसार सत्य सिद्ध हुई हैं, हो रही हैं, और होंगी। क्योंकि इन तथाकथित भविष्यवाणियों की स्पष्ट स्थिति बताना इस पुस्तक का विषय नहीं है। अतः हम यहां केवल ईसा से सम्बन्धित कुछ भविष्यवाणियों का ही विवेचन करेंगे।

मोटे तौर पर ईसा से सम्बन्धित मुख्य तथाकथित भविष्यवाणियां निम्नानुसार हैं–

१. इस्राएल के नये राजा का जन्म बेतलहम में होगा।
२. वह कुंआरी कन्या से पैदा होगा।
३. उसका नाम एम्मानुएल होगा।
४. वह आग से बपतिस्मा देगा।
५. वह तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा।
६. वह स्वर्ग से पुनः शीघ्र आएगा।

आइये हम इन भविष्यवाणियों का विवेचन कर लें।

१. इस्राएल के नये राजा का जन्म बेतलहम में होगा–

भविष्यवाणी का सन्दर्भ मत्ती की पुस्तक में निम्नानुसार है–

"राजा हेरोदस ने जनता के सब महापुरोहितों और शास्त्रियों को एकत्र कर उनसे पूछा, 'मसीह का जन्म कहां होना चाहिए?' उन्होंने बताया, 'यहूदा प्रदेश के बेतलहम गांव में', क्योंकि नबी का यह लेख है–

'ओ बेतलहम, यहूदा प्रदेश के गांव
तू यहूदा के प्रमुख नगरों में किसी से कम नहीं;

क्योंकि तुझमें एक नेता उत्पन्न होगा,
जो मेरी प्रजा इस्राएल का मेषपाल (*चरवाहा*) होगा।'''

मत्ती २:५

बाइबिल के प्रायः सभी संस्करणों में इस पद के लिये जो सम्बन्धित सन्दर्भ दिया जाता है वह है मीका ५:२। दि ओपन बाइबिल के प्रारम्भ में शब्द सूची में बेतलहम को "मसीहा के जन्म का पूर्वकथित" स्थान बताया है[1]। अब मीका का वह वाक्य देखिये-

"लेकिन तू, बेतलहम एप्राता, यद्यपि यहूदा के हजारों में तुम छोटे हो, पर मेरे लिए, तुझसे ही वह आएगा, जो इस्राएल का शासक होगा, जिसका उद्गम शाश्वत है।"

होली बाइबिल (किंग जेम्स), मीका ५:२

पाठक गण मत्ती में उद्धृत नबी की भविष्यवाणी और मीका ५:२ के शब्दों का मिलान करें और देखें कि दोनों में कितना अन्तर है कि न केवल शब्द वरन् भाव भी नहीं मिलते। मत्ती में बेतलहम के साथ गांव, नगर और उसमें एक नेता का पैदा होना कहा गया है-जबकि मीका के पद में ऐसा कुछ नहीं है। इस परेशानी से बचने के लिए और मीका के पद को मत्ती में कही गई भविष्यवाणी के अनुरूप बनाने के लिए हिन्दी बाइबिल में वाक्य को निम्नानुसार परिवर्तित किया गया।

"ओ बेतलहम एप्राता,
तू निस्सन्देह यहूदा प्रदेश के सब नगरों में छोटा है;
पर मेरे लिए,
तुझसे ही वह व्यक्ति निकलेगा,
जो इस्राएली राष्ट्र पर शासन करेगा,
उसका उद्गम प्राचीन काल से,
पुराने जमाने से है।"

मीका ५:२

जहां मूल वाक्य में 'नगर' शब्द ही नहीं था वह यहां मिला दिया गया है। 'हजारों' शब्द निकाल दिया गया।

निश्चित रूप से ईसा का जन्म बेतलहम शहर में हुआ। पर मीका के पद ५:२, जो मूल बाइबिल से उद्धृत किया गया है, उसमें बेतलहम

---

१. दि ओपन बाइबिल, पृष्ठ ७४

शब्द के साथ 'एप्राता' शब्द भी हैं। जबकि बेतलहम नगर के साथ 'एप्राता' शब्द है ही नहीं। शहर का नाम है बेतलहम, न कि बेतलहम एप्राता।

वास्तव में उक्त पद में बेतलहम एप्राता तो एक व्यक्ति का नाम है, जिसका नाम है 'एप्राता का पुत्र बेतलहम।'

सन्दर्भ प्रस्तुत है–

> "पनूएल का पुत्र गदोर था। एजर का पुत्र हूशाह था। ये हूर के पुत्र थे; ज्येष्ठ पुत्र एप्राता। एप्राता बेतलहम का पिता हुआ।"

१ इतिहास ४:४

मीका ५:२ में जो यह कहा गया है "तुझसे ही वह व्यक्ति निकलेगा का" यह तात्पर्य नहीं कि शहर में से निकलेगा वरन् व्यक्ति के प्रति शुभ चिन्तन है कि तेरी सन्ततियों में से कोई एक इस्राएल का शासक बने। वैसे भी ईसा इस्राएल के शासक कभी नहीं बन पाए। उनके जीवन काल में यहूदी धर्मगुरु उनके विरुद्ध रहे और मृत्यु के पश्चात यहूदी व ईसाई अलग हो गये। वे यहूदियों के हृदय सम्राट भी नहीं बन पाए।

इस प्रकार ईसा के बेतलहम शहर में पैदा होने का, मीका के इस उपरोक्त वाक्य/वचन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

२. वह कुंआरी कन्या से पैदा होगा–

इस भविष्यवाणी की हम पूर्व पृष्ठों में समीक्षा कर चुके हैं।

३. उसका नाम इम्मानुएल होगा–

ईसा के इम्मानुएल नाम के सम्बन्ध में उनकी जीवनी-सुसमाचार में निम्नलिखित पद हैं।

> **"यह सब इसलिए हुआ कि नबी कथित प्रभु का यह वचन पूरा हो : "कुंआरी कन्या गर्भवती होगी और वह पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम "इम्मानुएल (*अर्थात् परमेश्वर हमारे साथ*) रखा जाएगा।"**

मत्ती १:२२-२३

इस पद के लिए जो भविष्यवाणी या नबी कथित प्रभु का वचन सन्दर्भित किया गया वह निम्नानुसार है–

"अतः स्वयं स्वामी तुम्हें एक संकेत चिन्ह देगा : देखो एक कन्या गर्भवती होगी और वह एक पुत्र को जन्म देगी। वह उसका नाम 'इम्मानुएल' रखेगी।"

यशायाह ७:१४

यशायाह के इस वाक्य का विश्लेषण हम पूर्व पृष्ठों में कुंआरी कन्या के सन्दर्भ में कर चुके हैं। पाठकों का ध्यान हम पुनः आकर्षित कर दें कि मत्ती के १:२२-२३ के वाक्य में "कुंआरी कन्या" शब्द है, जबकि यशायाह के ७:१४ में 'कुंआरी' शब्द है ही नहीं।

यशायाह की "इम्मानुएल" नाम रखने की भविष्यवाणी होने पर भी मरियम के बालक का नाम "इम्मानुएल" नहीं, वरन् "यीशु" रखा गया। बाइबिल के वचन देखिये–

"यूसुफ ने पुत्र का नाम यीशु रखा।"

मत्ती १:२५

यूसुफ ने पुत्र का नाम यीशु क्यों रखा इसका कारण भी देखिये–

"आठ दिन की समाप्ति पर जब बालक का खतना हुआ, तब उसका नाम यीशु रखा गया। यही नाम उसके गर्भ में आने के पूर्व स्वर्ग दूत ने रखा था।"

लूका २:२१

क्या बालक के गर्भ में आने के पूर्व ही स्वर्गदूत ने उसका नाम रख दिया था? जब भविष्यवाणी के अनुसार पूर्वजों के भी जन्म के पहले ही माता के गर्भधारण के समय वैवाहिक स्थिति व बालक का नाम कहा जा सकता है तो गर्भधारण के पूर्व नाम रखना क्या असंभव है। पर यहां मत्ती लूका के विरोध में है। देखिये–

"यीशु की माता मरियम की मंगनी यूसुफ से हुई थी, पर उनके मिलन के पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई।

...यूसुफ इस सम्बन्ध में विचार कर ही रहा था कि प्रभु के दूत ने उसे स्वप्न में दर्शन दिया और कहा, 'यूसुफ! दाउद के वंशज! अपनी पत्नी मरियम को स्वीकार करने में न डर; क्योंकि उसके जो गर्भ है, वह पवित्र आत्मा से है। वह पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह

अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।'''

मत्ती १:१८,२०-२१

अब बालक का नाम गर्भ में आने से पहले ही निश्चित हो गया था या गर्भ में आने के बाद यह निश्चित नहीं। क्योंकि नबी भी परमेश्वर का सन्देश देते हैं और स्वर्गदूत या प्रभु के दूत भी परमेश्वर का ही सन्देश देते हैं। परमेश्वर नबी के द्वारा इम्मानुएल नाम कहलवाता है और एक दूत के द्वारा यीशु। शायद परमेश्वर निश्चित नहीं कर पाया। पर इस अनिश्चितता में परमेश्वर ने अपने ही नबी की भविष्यवाणी को झूठा सिद्ध करवा दिया। और बालक का नाम इम्मानुएल नहीं, वरन् यीशु रखा गया।

४. वह आग से बपतिस्मा देगा–

बपतिस्मा ईसाई धर्म-दीक्षा की एक प्रक्रिया है, जिसमें दीक्षित व्यक्ति-प्रायः बच्चे को-पानी में डुबकी लगवाई जाती है, पर विशेष परिस्थितियों में जब डुबकी योग्य पानी न हो, या अन्य किसी कारण से यह सम्भव न हो तब पानी से धोया, पोंछा, या पानी के कुछ छींटे भी डाले जा सकते हैं। जैसे मदर टेरेसा मरणासन्न व्यक्ति के स्वर्ग जाने की इच्छा प्रकट करने पर गीले कपड़े से उसका कपाल पोंछती थी मानों वे उसे ठण्डा रखने या साफ करने का प्रयास कर रही हों, पर वास्तविकता में वे बपतिस्मा की प्रक्रिया कर रही होती थी।[१]

बपतिस्मा की प्रक्रिया का पुराने नियम-विशेषतः व्यवस्था में कहीं भी उल्लेख नहीं है। परन्तु ईसा के भी पूर्व यहूदियों में यह विधि प्रचलित थी। ईसा को बपतिस्मा यूहन्ना-जॉन दि बेप्टिस्ट-ने तीस वर्ष की उम्र में दिया था। *(लूका ३:२३)*

ईसा द्वारा आग से बपतिस्मा देने की भविष्यवाणी बाइबिल में निम्नानुसार की गई है।

''जब यूहन्ना बपतिस्मा दाता ने अनेक फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा लेने के लिये अपने पास आते देखा तब उनसे कहा....

'मैं तुम्हें जल से हृदय परिवर्तन का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे पीछे आ रहा है, वह मुझसे अधिक सामर्थी है। मैं

---

१. हितवाद नागपुर, १९-९-९७

उसके जूते उठाने के योग्य भी नहीं हूं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'''

मत्ती ३:७, ११

''यूहन्ना ने सबसे कहा, मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूं, पर एक मुझसे अधिक सामर्थी आ रहा है, मैं इस योग्य भी नहीं कि उसके जूते के बन्ध खोलूं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'''

लूका ३:१६

पर इन दो भविष्यवाणियों के होते हुए भी ईसा ने किसी को आग से बपतिस्मा नहीं दिया। और ईसाई जगत में आज भी बपतिस्मा पानी से ही दिया जाता है। और इस प्रकार आग से बपतिस्मा देने की भविष्यवाणी झूठी सिद्ध हो गई।

हां, यह अवश्य हुआ कि ''आग से बपतिस्मा'' अंग्रेजी भाषा में एक मुहावरे के रूप में प्रचलित है, जिसका अर्थ होता है नये कार्य या प्रक्रिया को करने में आने वाली प्रारम्भिक कठिनाइयां।[१]

यद्यपि बाइबिल की आग से बपतिस्मा देने की भविष्यवाणी ईसा में पूर्ण नहीं हुई, पर इसके विपरीत वैदिक धर्म में सभी दीक्षा कार्यक्रम यज्ञ की अग्नि के सम्मुख बैठकर ही किये जाते हैं और इसके पूर्व स्नान भी प्रायः आवश्यक होता है। यही आग से बपतिस्मा है।

सम्भवतः उस काल में उस देश में वैदिक धर्म के कुछ कर्मकाण्ड के रूप में यज्ञ प्रक्रिया चलती होगी। जिसके साथ संस्कार आदि होते हैं। उन यज्ञों को देखकर ''जॉन दि बेप्टिस्ट'' ने यज्ञ से दीक्षा या आग से बपतिस्मा की बात कही होगी।

उपरोक्त मत्ती ३:७, में सन्दर्भित फरीसी व सदूकी, यहूदियों के दो सम्प्रदाय थे, जो आपस में कट्टर मतभेद रखते थे।[२]

५. ईसा तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में—

ईसा मसीह के मृत्युदण्ड के पश्चात, उन्हें एक कब्र में रखा गया था, जहां से वे कुछ समय पश्चात गायब हो गए थे। इस सम्बन्ध में स्वयं ईसा मसीह के इन वचनों को भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत

१. आक्सफोर्ड एडवान्एड लर्नर्स डिक्शनरी
२. बाइबिल मत्ती ३:७ की पाद टिप्पणी

किया जाता है–

"यीशु ने उत्तर दिया–'यह पीढ़ी दुष्ट है, और परमेश्वर के प्रति निष्ठावान् नहीं है। यह चिन्ह ढूंढ रही है। परन्तु इसे नबी योना के चिन्ह के अतिरिक्त कोई अन्य चिन्ह न मिलेगा। जैसे योना तीन दिन और तीन रात जल-जन्तु के पेट में रहा, उसी प्रकार मानव-पुत्र तीन दिन और तीन रात भूमि के भीतर रहेगा।'"

मत्ती १२:३९-४०

योना एक नबी था जो "प्रभु के सम्मुख से दूर हो" (योना १:३) जाने के लिये जलयान में यात्रा कर रहा था। मार्ग में तूफान आने पर "नाविकों ने योना को उठाया और उसको समुद्र में फेंक दिया (योना १:१५)। प्रभु के आदेश से एक बड़ा मच्छ योना को निगल गया। योना तीन दिन और तीन रात उस मच्छ के पेट में पड़ा रहा (योना १:१७) योना ने मच्छ के पेट में अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की (योना २:१) प्रभु ने मच्छ को आदेश दिया। उसने योना को समुद्र तट पर उगल दिया (योना २:१०)

मत्ती की पुस्तक के उपरोक्त उद्धरण में प्रथम ध्यान देने योग्य बात यह है कि ईसा ने स्वयं अपने को "मानव पुत्र" कहा है, न कि परमेश्वर पुत्र जैसा कि सामान्य रूप से उन्हें प्रचारित किया जाता है।

अब ईसा के मृत्युदण्ड एवं उसके बाद की घटनाओं की विवेचना की जाय कि क्या वास्तव में वे तीन दिन और तीन रात भूमि के भीतर कबर में रहे।

अब बाईबिल के इन वचनों को ध्यान से पढ़िये–

"नौ बजे का समय था; उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया।" ...दोपहर होने पर समस्त देश में अन्धकार छा गया, और तीन बजे तक बना रहा। लगभग तीन बजे यीशु ने उच्च स्वर में कहा...पर यीशु ने ऊंचे स्वर में चिल्लाकर प्राण त्याग दिया. ..अब संध्या हो गई थी, यह विश्राम दिवस के पूर्व तैयारी का दिन था...।

...पिलातुस ने यूसुफ को शव दिला दिया। यूसुफ ने मलमल की चादर मोल ली और शरीर (शव) को उतार कर उसमें लपेटा तथा चट्टान में खुदी हुई कबर में उसको रख दिया।

कबर के द्वार पर यूसुफ ने एक भारी पत्थर लुढ़का कर लगा दिया...।
विश्राम दिवस समाप्त होने पर मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, और शलोमी ने सुगन्धित द्रव्य मोल लिए कि जाकर यीशु के शरीर पर उनको लगाएं।
सप्ताह के पहले दिन, बड़े सवेरे, जबकि सूर्य उदय ही हुआ था, वे कबर पर आईं...।
पर जब उन्होंने ऊपर दृष्टि की तो देखा कि पत्थर हटा हुआ है...।
कबर के भीतर आने पर उन्होंने देखा कि सफेद वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है...।
पर उस युवक ने उनसे कहा–'आश्चर्यचकित मत होवो, तुम नासरत–निवासी क्रूसित यीशु को ढूंढ रही हो। वह जीवित हो उठे हैं। वह यहां नहीं हैं'....।
सप्ताह के पहले दिन, प्रातःकाल जी उठने पर यीशु ने सर्वप्रथम मरियम मगदलीनी को दर्शन दिया...''।

मरकुस १५:२५,३३-३४,३७,४२,४५-४६, १६:१-२,४,५,६, १६:९

सामान्यतः कबर जमीन में गड्ढा खोदकर बनाई जाती है जिसमें शव को रखकर उस पर मिट्टी आदि डालकर भर दिया जाता है। इसके विपरीत ऊपर जो कबर कही गई है वह चट्टान में खोदकर एक कमरा जैसा होता है जिसमें शव के अतिरिक्त भी पर्याप्त स्थान होता है कि कोई बैठ सके। मिट्टी आदि से भरकर उसे बन्द नहीं किया जाता। ~~उसे~~ विश्राम दिवस कहते हैं शनिवार को। विश्राम दिवस से पूर्व तैयारी का दिन अर्थात् शुक्रवार, और सप्ताह का पहला दिन अर्थात् रविवार। यहूदी और ईसाई मान्यता के अनुसार परमेश्वर ने रविवार से शुक्रवार तक छः दिनों में सृष्टि की रचना कर सातवें दिन शनिवार को थक कर विश्राम किया। इसी मान्यता के कारण केलेण्डर में रविवार को सप्ताह का प्रथम दिन रखा जाता है। प्रारम्भ में ईसाई लोग भी शनिवार को विश्राम दिवस मनाकर, पूजा अर्चना करते थे। पर कालान्तर में यहूदियों से अलग अस्तित्व के रूप में, और विशेषतः ईसा के कबर में से जी उठने पुनर्ज्जीवन के दिवस के कारण सप्ताह का पहला दिन रविवार, आराधना के लिये विशेष महत्वपूर्ण हो गया

(प्रेरितों के कार्य २०:७, १ कुरिंथयों १६:२) प्रकाशन १:१० में इसे प्रभु दिवस कहा गया।

अब दिवसों की इस पृष्ठभूमि में ईसा के कब्र में रखे जाने और बाद में वहां से गायब होने की घटनाओं को क्रम से पढ़कर विचार कीजिए–

विश्राम दिवस के पूर्व तैयारी के दिन अर्थात् शुक्रवार को प्रातः ९ बजे यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। तीन बजे पश्चात यीशु ने प्राण त्याग दिए और संध्या के पश्चात यूसुफ ने शव को खुदी हुई कब्र में रख दिया। अर्थात् कब्र में शव शुक्रवार की रात्रि को रखा गया।

दूसरे दिन विश्राम दिवस-शनिवार था, अतः कुछ नहीं किया।

विश्राम दिवस समाप्त होने पर, अर्थात् शनिवार समाप्त होने पर, सप्ताह के पहले दिन अर्थात् रविवार को, जब सूर्य उदय ही हुआ था, महिलायें कबर पर आई और यीशु वहां कबर में नहीं थे।

इस प्रकार ईसा कब्र में शुक्रवार की रात्रि से अधिकतम रविवार की प्रातःकाल तक ही कब्र में रहे। अधिकतम शब्द इसलिये कि शनिवार के दिन तो कबर पर पहरा लगा दिया गया था।

> "दूसरे दिन, अर्थात् विश्राम दिवस पर महापुरोहितों और फरीसियों ने पितालुस के सम्मुख एकत्र हो उससे कहा... अतएव आज्ञा दीजिये कि तीसरे दिन तक कबर पर पहरा दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि उसके शिष्य उसे चुरा ले जाएं और लोगों से कहने लगें, 'वह मृतकों में से जीवित हो उठे। तब यह अन्तिम धोखा पहले से अधिक बुरा होगा'''...।
>
> "...तब वे गए और उन्होंने कबर के मुंह पर मुहर लगा दी तथा वहां पहरेदारों को बैठा कर कबर को सुरक्षित कर दिया"।

मत्ती २७:६२,६४,६६

इस प्रकार शनिवार को कबर पर मुहर लगाकर पहरा बिठाया गया। शनिवार का समय नहीं बताया गया–और यह भी स्पष्ट नहीं कि रविवार को प्रातः महिलाओं के कबर पर पहुंचने पर मुहर की स्थिति क्या थी और पहरेदार कहां थे।? अतः यह बिलकुल सम्भव है कि शनिवार को कबर पर मुहर लगाकर पहरेदारों को बिठाने के पहले ही, ईसा "पुनर्जीवित" (?) होकर बाहर चले गये हों। क्योंकि

मुहर लगाते एवं पहरा बिठाते समय कबर को अन्दर से देखकर यह सुनिश्चित नहीं किया गया था कि ईसा अन्दर हैं। इस कारण ऊपर हमने रविवार की प्रातः शब्दों के पहले ''अधिकतम'' शब्द का प्रयोग किया। और जब मुहर लगी थी और पहरा था तो कबर के अन्दर 'युवक' कहां से आ गया?

शुक्रवार की रात्रि से रविवार की प्रातः तक कुल मिलाकर होते हैं—दो रात्रि और एक दिन—शुक्रवार की रात्रि, शनिवार का दिन, और शनिवार की रात्रि। जिनका योग होगा लगभग छत्तीस घण्टे।

अब कहां गई तीन दिन और तीन रात भूमि के भीतर रहने की भविष्यवाणी? इस प्रकार ईसा की स्वयं के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी कि ''मानव पुत्र'' तीन दिन और तीन रात भूमि के भीतर रहेगा, झूठी ही रही।

६. वह स्वर्ग से पुनः शीघ्र आयेगा—

अब विवेचना के लिये चुनी गई अन्तिम भविष्यवाणी कि वह अर्थात् ईसा मसीह स्वर्ग से पुनः शीघ्र ही धरती पर आयेंगे।

नये नियम में ईसा मसीह के स्वर्ग से पुनः वापस, इस धरती पर, आने की भविष्यवाणी की गई है। उदाहरण प्रस्तुत है—

''जब मानव-पुत्र अपने स्वर्ग दूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, तब वह प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। मैं तुमसे सच कहता हूं। यहां कुछ व्यक्ति खड़े हैं, जो जब तक मानव-पुत्र को अपने राज्य में आता हुआ न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।''

मत्ती १६:२७-२८

अर्थात् ईसा के सामने खड़े कुछ व्यक्तियों की मृत्यु के पूर्व ही, ईसा का स्वर्ग से पुनरागमन होना था। पर वह न हुआ।

''जब यीशु जैतून पहाड़ पर बैठे थे, तब शिष्य उनके पास आए और एकान्त में उनसे पूछा, ''हमें बताइये कि ये घटनाएं कब होंगी? आपके पुनरागमन का और युगान्त का चिन्ह क्या होगा?...''

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया—

'सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा,
चन्द्रमा प्रकाश न देगा,

आकाश से तारागण गिरेंगे...

...जब तुम इन सब बातों को होते हुए देखो तो जान लेना कि मानव-पुत्र निकट है, वरन् द्वार पर है। मैं तुमसे सच कहता हूं : जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएं, इस पीढ़ी का अन्त न होगा। आकाश और पृथ्वी टल जाऐंगे, पर मेरे शब्द कदापि न टलेंगे।'''

मत्ती २४:३,४,२९,३३-३५

न केवल ईसा के सामने उपस्थित पीढ़ी का अन्त हुआ, वरन् पिछले दो हजार वर्षों में ५०-६० पीढ़ियां आकर चली गई पर, न तो ईसा का पुनरागमन हुआ और न ही सूर्य अन्धकारमय या चन्द्रमा प्रकाशहीन हुआ और न ही तारागण गिरे। आकाश और पृथ्वी तो न ही टले, वरन् अपनी पूर्ववत स्थिति में रहे, पर ईसा का वचन अवश्य टल गया। झूठा सिद्ध हो गया।

एक और उदाहरण देखिये-

''यह यीशु मसीह का प्रकाशन है...।
यीशु मसीह ने अपना स्वर्ग दूत भेजकर, अपने सेवक यूहन्ना को सब कुछ बताया;....
कोई व्यक्ति मुझसे कह रहा था,
'मैं शीघ्र आ रहा हूं....''

प्रकाशन १:१, १:११,३:११

और यह शीघ्र कब होगा कुछ भी निश्चित नहीं; ईसा को गये लगभग २००० वर्ष तो हो गये पर अभी तक तो इस शीघ्र की अवधि समाप्त नहीं हुई।

❑❑❑

ईसा मसीह की दूसरी विशेषता यह प्रचारित की जाती है कि उनकी माता मरियम कुंआरी थीं। हालांकि प्राकृतिक रूप से यह सम्भव नहीं है, पर ईसाई मत की यह मान्यता है। और इसके लिये लिखा गया–

"यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ; यीशु की माता मरियम की मंगनी युसूफ से हुई थी, पर उनके मिलन के पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई।"

मत्ती १:१८

और अपनी कल्पना या इच्छा को सही सिद्ध करने के लिए प्रमाण दिया जाता है बाइबिल के पद का, जो भविष्यवाणी कही जाती है एवं निम्नानुसार है–

"अतः स्वयं स्वामी तुम्हें एक निशानी देगा। 'कुंआरी' गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी।"

नया अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण-दि बाइबिल यशायाह ७:१४

पर प्रोटेस्टेष्ट बाइबिल में, जो कि भारत में बहु-प्रचलित है, यह "कुंआरी" शब्द घुसेड़ा हुआ है क्योंकि कैथोलिक बाइबिल में यहां 'कुंआरी' नहीं, बल्कि 'युवा महिला/युवती' शब्द है। देखिये–

"अतः स्वयं स्वामी तुम्हें एक निशानी देगा। देखो 'युवती' गर्भवती है और एक बच्चे को जन्म देगी।"

होली बाइबिल रिवाइज्ड स्टेण्डर्ड वर्जन, इसायाह ७:१४

यहां पद में 'युवती' शब्द है जिसे अन्य प्रकाशनों में 'कुंआरी' किया गया। एक विशेष बात और–यहां सन्दर्भ वर्तमान काल का है–"गर्भवती है", जबकि नये अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण में उसे भविष्यवाणी

सिद्ध करने के लिये "गर्भवती होगी" भविष्यकाल का प्रयोग किया गया है। दि ओपन बाइबिल के अनुसार इसाइया/यशायाह का काल ७४० से ६८० ईसा पूर्व का है।[१] अतः इतने वर्ष बाद घटित होने वाली घटना के लिये वर्तमान काल का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

"बाइबिल इन टूडे'ज वर्जन" में भी यहां'युवा महिला/युवती'शब्द का ही प्रयोग किया गया है। और पाद टिप्पणी में लिखा है कि मूल हिब्रू के शब्द का अर्थ'विवाह योग्य युवती'से होगा।[२]

हिन्दी बाइबिल का प्रस्तुतीकरण निम्नानुसार है–

"अब स्वयं स्वामी तुम्हें एक संकेत चिन्ह देगा। देखो, एक 'कन्या'गर्भवती होगी और वह एक पुत्र को जन्म देगी।"

यशायाह ७:१४

यहां भी 'कुंआरी' की परेशानी से बचने के लिये 'कन्या' शब्द का प्रयोग किया गया है।

एक बात और विचारणीय है कि सामान्यतः सभी महिलायें प्रथम गर्भधारण की उम्र में कुंआरी ही होती हैं। और यह भी प्रायः होगा कि वे "युवती" ही हों। कभी-कभी प्रथम गर्भधारण बड़ी उम्र में, युवापन समाप्त हो जाने के पश्चात हो सकता है। इन्हीं सब सम्भावनाओं को समाप्त करने के लिये लिखा गया।

"पर उनके मिलन से पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई।"

मत्ती १:१८

हालांकि यहां हिन्दी के अनुवादक एक गलती और कर गये। यशायाह ७:१४ की उपरोक्त उद्धृत भविष्यवाणी, जो मरियम के पवित्र आत्मा से गर्भवती होने की बताई जाती है, उसमें कन्या शब्द का प्रयोग है। पर जब यही भविष्यवाणी मत्ती में उद्धृत की गई तो वहां 'कन्या' के स्थान पर 'कुंआरी' ही रह गया।

"यह सब इसलिए हुआ कि नबी-कथित प्रभु का यह वचन पूरा हो :'कुंआरी'कन्या गर्भवती होगी और वह पुत्र को जन्म देगी।"

मत्ती १:२२-२३

---

१. जेसस दि मेन, पृष्ठ ४५
२. दि ओपन बाइबिल, पृष्ठ ६७५
३. गुड न्यूज बाइबिल, पृष्ठ ६७३

जबकि नबी-कथित भविष्यवाणी में तो 'कुंआरी शब्द' है ही नहीं, फिर यहां यह 'कुंआरी' क्यों?

अनेक विद्वानों का मत है कि 'वर्जिन' जिसका, अनुवाद 'कुमारी/कुंआरी' किया गया है, पूर्वकाल में एक विशेष मत में एक प्रकार की 'नन' को भी कहा जाता था। साथ ही कभी सगाई के पश्चात किन्तु विवाह के पूर्व सम्बन्ध हो जाने पर यही कहा जाएगा कि कुंआरी गर्भवती हो गई : कारण वैधानिक दृष्टिकोण से वह महिला कुंआरी ही होगी, भले ही शारीरिक दृष्टिकोण से न हो। ईसा की माता मरियम एक 'वर्जिन' अर्थात् 'नन' थी, जिसकी सगाई युसूफ से हुई थी और मरियम विवाह के पूर्व ही गर्भवती हो गई थी।[१]

मत्ती १:१८

❑❑❑